WWJMRD 2017; 3(10): 14-18
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
UGCApproved Journal
Impact Factor MJIF: 4.25
e-ISSN: 2454-6615

पंकज उपाध्याय
शोध छात्र– मानवविज्ञान विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा. महाराष्ट्र भारत

Correspondence:
पंकज उपाध्याय
शोध छात्र– मानवविज्ञान विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा. महाराष्ट्र भारत

कोलाम आदिम जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक संस्कार महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के विशेष संदर्भ में

पंकज उपाध्याय

संक्षेपिका
किसी भी समाज के संस्कार उसकी सांस्कृति विरासत कीएक बानगी के तौर पर अन्य समाजों के लिएएक अवधारणात्मक प्रवृति रखते है। संस्कारों की निर्मिति किसी समुदाय की सामाजिक व्यवहारिकी को प्रदर्शित और संदर्भित करने काएक माध्यम होता है। जिसके उद्देश्यों में प्रकृति में विरोधी शक्तियों के प्रभावों को दूर करना तथा हितकारी शक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करना होता है। यह प्रभावशीलता मानव के जीवन को प्रभावित करने वाली आंतरिकएवं बाह्य शक्तियों के संतुलन के लिएएक संस्थागत उत्थान के तौर पर हर संस्कृति और समाज का हिस्सा रही है। सामाजिक अनुशासन और उसकी प्रस्थिति को बनाने तथा समुदाय के नैतिक उत्थान के लिए ये संस्थागत दवाब मनुष्य के संपूर्ण जीवन में किसी न किसी रूप में प्रदर्शित होते है। संस्कार वर्ण–धर्म और आश्रम–धर्म जैसी व्यवस्थाओं के माध्यम से संचालित और परिवर्तित होते है। कोलाम आदिम जनजाति समूह वर्षों के देशज संस्कृति के संवाहक के तौर पर प्रवसन के प्रभावों से विचरण करने वाले समुदाय के रूप में रहा है। इस शोध पत्र के माध्यम से कोलाम की विलुप्त होते सांस्कृति और सामाजिक संस्कारों को चिन्हित किया गया है। जिनके बिना कोलाम की आदिम सभ्यता के संस्कारों की स्थिति को रेखांकित किया गया है।

मुख्य शब्द– कोलाम आदिम जनजाति,संस्कार, सांस्कृतिक ,यवतमाल

परिचय
मानवशास्त्र में सामाजिक संगठन की अवधारणाएक अत्यंत व्यापक अवधारणा है जिसके आर्थिक–राजनैतिकएवं अन्य सभी प्रकार उद्देश्यों से संबन्धित सामाजिक सम्बन्धों की समग्रता के रूप में माना जाता है। किन्तु सामाजिक सांस्कृतिक उदविकास के क्रम में जैसे–जैसे उद्देश्यों में बहुलता आती गई वैसे–वैसे सामाजिक संगठन की जटिलता में वृद्धि होती गई। मनुष्य तथा उसके पर्यावरण के सांकृतिक प्रभाग के गत्यात्मक सह सम्बन्धों के अध्ययन के रूप में ये भौतिक संस्कृति का निर्माण पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुरूप करने और उसे अपने जीवन शैली का हिस्सा बनाने में आदिम समाज काफी करीबी रहा। कोलाम आदिम जनजाति प्रकृति पुत्र के रूप में जंगलों पर अपनी निर्भरता और मनुष्य–प्रकृति सम्बन्धों की सहनिर्भरता के रूप में लेकर चलता रहा है। कोलाम के प्रकृतिक वास मुख्यतः जंगल के इर्द–गिर्द रहे हें जहां जंगल की निर्भरता और अन्य समाज से कम संपर्क होने के कारण उन्हे अपनी जीवन शैली को उसी के अनुरूप बनाए रखना पड़ा।
भौतिक संस्कृति के रूप में वह संस्कृति जो समक्ष महसूस की जा सके आती है। कोलाम लोगों पर पूर्व में हुये अध्ययनों के अनुसार उनकी परंपरागत जीवन शैली और उपकरणों के आधार पर उन्हे आदिम श्रेणी में रखा जाता है जिसकी मुख्य विशेषताओं के रूप में कोलाम लोगों की आवास व्यवस्था, रंग–रूप व वस्त्राभूषण ,भोजन और आचार–व्यवहार आदि शामिल है। व्यवहारों के स्तर पर परिवर्तनशील अभौतिक संस्कृति के अनुरूपों पर सीधा असर उनके प्रवसन के कारण पड़ा। पूर्व में तमिल क्षेत्र की कोलामल पहाड़ियों पर निवास करने वाली कोलाम जनजाति विभिन्न प्रवसन के दबावों के चलते आंध्रप्रदेश,मौजूदा तेलांगना और महाराष्ट्र के कुछ विर्दभ के इलाकों में पायी जाने वाली देशज समुदाय के रूप में चिन्हित है। विभिन्न प्रवसन के प्रभावों के साथ–साथ भिन्न सांस्कृतिक समूहों से मिलने के कारण उनके सांस्कृतिक संस्कार और मूल्य भी समय के साथ प्रभावित रहे है। जिन्हें इस पत्र के माध्यम से चिन्हित किया गया है।

प्रविधि
यह शोध पत्र शोधार्थी केएम.फिल के विस्तृत अध्ययन काएक भाग है।इस शोध पत्र का प्रमुख शोध प्रश्न कोलाम समाज की सांस्कृतिक दृसामाजिक जीवन शैली को नजदीक से देखने और

उनके स्वरूपों में आये विभिन्न पहलूओं को चिन्हित करना था। जिस मानवविज्ञान की प्रमुख शोध प्रविधि, क्षेत्रीय कार्य द्वारा पूर्ण किया गया है। शोध क्षेत्र के रूप में यवतमाल जिले के दो तहसीलों के पांच कोलाम बहुल गांवों को शामिल किया गया है। जिसमें क्षेत्रीय कार्य की अवधिएक माह और निदर्शन हेतु पांच गांवों के 100 परिवारों का चयन किया गया था।तथ्यों को प्राथमिक आंकड़ों के रूप में साक्षात्कारएवं अवलोकन तकनीक के द्वारा प्राप्त किया गया है। तुलनात्मक विश्लेषण हेतु पूर्व में हुए अध्ययनोंएवं द्वितियक स्रोतों का प्रयोग पुनःनिश्चित किया गया।

तथ्यएवं विचार (DiscussionAnd facts)

सांस्कृतिक–सामाजिक संदर्भों में किसी समाज के संस्कारों की वस्तुस्थिति के लिए भौतिकएवं अभौतिक संस्कृति के दोनों पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है इसी क्रम में कोलाम की सामान्य दृष्टिगत संस्कृति के साथ–साथ विशिष्ट सांस्कृतिक साक्ष्य निन्मवत है –

शारीरिक रूपरेखा और भौतिक संस्कृति

प्रकृति पुत्र कोलाम की त्वचा का रंग प्रायः काले से लेकर हल्का बादामी तक मिलता है। द्रविडियन प्रजाति होने और दक्षिण भारत मे निवास करने के कारण उष्ण तापमान इसका मुख्य कारण है। प्रोटो–आस्ट्रलाइड प्रजाति के कोलाम लोगों की नाक चौड़ी होती है और होंठ मोटे तथा आंखें औसतन कम गोल और काली होती है। समान्यतः गोंड(जनजाति)की ही तरह ही कोलाम लोग वस्त्र पहनते है परंतु कोलाम महिलाए कुछ आभूषण भी पहनती जिनमे ज्यादातर गर्दन मे पहने जाने वाले काली गोटियां और शीशे के बनी हुई हसूली पहनती है। लकड़ी और अल्लुमिनिउम से बने कड़े भी इनके हाथों मे देखे जा सकते है। साधारणतः वेषभूषा में कोलाम पुरुष प्रायः फटका पहनते है। स्त्रियां केवल साड़ी लपेटती हैं जिसे लुगता कहते है यह बारह से सोलह हांथ की होती है। पुरुष सिर मे पगड़ी या सूती टोपी पहनते है। मौजूदा समय मे वेश–भूषा अब पष्चिमी कपड़ो के रूप मे पैंट–शर्ट और रंगीन साड़ियों के रूप मे पाई जाती है जिसे विशेष अवसरों (विवाह,त्योहारों)मे पहनते है।

वस्त्राभूषण –अपनी वेषभूषा के मामले मे कोलन लोग अपनी नजदीकी जनजाति परधान और कुनबी समाज का संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के अनुसरण कर रहे है। और यही कारण है की उनके परंपरागत वस्त्रों का स्वरूप बदलकर आधुनिक होता जा रहा है। हालांकि विशेष अवसरों गांवबानी,दंदारी आदि पर्वा पर परंपरागत नृत्य के साथ वस्त्र भी पहने जाते है।

भोज्य संस्कृति (food culture)

कोलाम जनजाति के लोगों का प्रमुख भोजन कुछ खास नही ही वे समान्यतः तुअर अरु काकुन से बने हुए दलीये का सेवन करते हैं। स्वभाव से मांसाहारी कोलाम लोग जंगलों के अपने पूर्व निवासों मे शिकार कर भोजन करते है। मुख्यतः खरगोश, सुअर, गोडरी, चूहा, बकरा, सांप, तीतर ,तोता, मुर्गा,केकड़ा और बिच्छू तक खाते हैं। ये लोग शेर, भालू, लकड़बग्घा , बिल्ली, कुत्ते, बंदर, नीलकंठ का मांस नही खाते हैं।इन प्राणियों का मांस खाना समुदायिक प्रथा के अनुसार निषेध है। जंगल परिसर मे होने वाली साग–भाजियों, कंद–मूल और जंगली फलों को बड़े चाव से खाते है। जैसे, चिरोंजी, तीखुर, पिपरी के बीज ,जीहरी, बाइचांडी, प्रमुख रूप से प्रयोग मे लाते है।

मराठी संस्कृति के संपर्क और हिन्दू सभ्यता के नजदीक होनेके कारण अधिक मिर्च और मसाले युक्त खाना और चूहे, मुर्गे, के चूजों, कौवों के बच्चो को सूखे घास मेन भून के खाना इन्हे बहुत पसंद है। दीमक से बनी चटनी का सेवन भी कोलाम लोग करते हैं। कोलाम समाज मे मे भी अन्य जनजातीय समाजों की ही तरह मदिरा का चलन है। इस प्रथा मे अपने हाथों से महुआ की शराब बनाते है और उसका समूहिक सेवन करते हैं।

आवास–व्यवस्था

कोलाम जाति अपने स्वभाव के कारण पहाड़ोंएवं जंगलों में बसना पसंद करते हैं। कोलाम समूह मे रहते हैं। आठ–दस घरों काएक टोला होता है जिसे पोड़ कहते हैं। डुबली पोड़ के नाईक के अनुसार पहले पोड का बसाव आज की तरह नही होता था बस्ती के बीच मेएक मैदान होता था और बस्ती गोल आधिवास मे बस्ती थी। सभी मकानो का मुह मैदान की ओर होता था। मकानो तक जाने के लिएएक मुख्य मार्ग होता था। कोलाम लोगएकल परिवार की व्यवस्था को मानते है परिवार मे माता–पिता और बच्चे शामिल होते हैं, विवाह के पश्चात अमूमन परिवार अपना अलग घर बना लेते हैं। अधिकतर किसी पोड़ मेएक रक्त परिवार के लोग निवास करते है।

कोलाम लोग मकान अपने हाथों से बनाते हैं मकान के लिए जंगल से लकड़ी काट कर खुद लाते है। मकान बनाने के लिए लकड़ी, बांस, डोरा बक्कल और घास का इस्तेमाल किया जाता है। समूहिक मदद से गांव के लोग घर बनाने मे सहयोग करते है इसे सहकारिता कहते है। मकान तैयार करने के बाद घर का मालिक सहकारिता करने वाले लोगों को महुआ की शराब के कर उन्हे धन्यवाद देते हैं।

अभौतिक संस्कृति

अन्य जनजातीयों की तरह कोलाम लोग भी प्रकृति के करीब होते है। प्रकृति पूजन और उसके प्रति सम्मान की भावना इनमे पाई जाती है। कोलाम लोगों की आस्था पूर्वज पूजा मे भी है कई स्थानीय देवी–देवताओं के बीच कोलाम लोग अनेक अवसरो पर इनकी पूजा के जरिये सम्मान प्रकट करते है। ये लोग खुद को हिन्दूओं के करीब मानते है। हिन्दू गोंड समाज की तरह ये लोग भी हिन्दू देवी देवताओ की पूजा करते है। माहुर और रेनुका देवी की पूजा के साथ ये लोग सीता की भी पूजा करते है। ईसाई और इस्लाम के धर्मा के संपर्क मे आने के कारण इनके धार्मिक जीवन मे भी कुछ परिवर्तन आए पर समान्यतः अपने परंपरागत धार्मिक अनुष्ठान के प्रति कोलाम प्रतिबद्ध है। बहुत सारे कोलाम लोगों खुद को महाभारत काल के पांडवो के कुल के बताते है उनका मानना है की पांडव उनके पूर्वज रहे है। यही कारण रहा है कि कोलाम के धार्मिक और अभौतिक संस्कृति के तत्वो मे हिन्दू रंग दिखायी पड़ता है।

कोलाम जनजाति आनुवांशिक दृष्टिकोण से स्पस्टतःएक है। हालांकि सामाजिक सांस्कृतिक –भौगोलिक कारणो से इनकी व्यवहारिक स्थितियां अलग हो जाती है। जहां इनमे अलग–अलग सामाजिक सांस्कृतिक संस्कारों से भी युक्त दिखाई देते है। परंतु ये भिन्नता व्यावहारिक ही होती है। ये संस्कार मुख्यतः जन्म–विवाह और मृत्यु आदि मानव जीवन के आधारभूत आयामो से जुड़ें हुएं हैं।

कोलाम समाज मानव समाज जीवन के सूक्ष्मतम मूल्यों की अभिव्यक्ति ,संतान जन्म ,विवाह और मृत्यु संस्कारों का विभिन्न तरीकों से निस्पदित करते है। जन्म मानव जीवन का सबसे कठिन परंतु सबसे स्वभावतः अति आनंदमय संस्कार है जो कोलाम माता के लिए ये व्यथा और अल्हाद का संगम होता है। परिजनो के लिए यह मानव प्रगति का प्रतीक होता है।

जन्म संस्कार

कोलाम नारी गर्भवती होते ही विभिन्न प्रकार के धार्मिक ,तांत्रिक अनुष्ठानों ,टोटकेएवं विधियों के सम्पादन मे लग जाती हैं। इनका गर्भकाल काफी सतर्कता और संयम से व्यतीत होता है। बोटोणी गांव के नाईक के अनुसार गर्भवती कोलाम महिलाएं जंगल तथा पोड के कुछ स्थानो पर जाने से परहेज करती है

जिसका मुख्य कारण कोलाम समाज का संस्कृति तंत्र मंत्र पर आधारित है। गांव या जंगल मे कुछ विशेष जगहों पर ही तांत्रिक शक्तियां सिद्ध की जाति है। अतः गर्भवती इन स्थानो पर अगर जाती है तो यहां पर उपस्थित तंत्र ,जागृत आत्माएं गर्भ को नुकसान पहुंचा सकती है साथ–साथ गर्भवती को प्रसूति क्रिया मे व्यवधान या पीड़ा हो सकती है। प्रायः यह देखा गया है की बच्चा पैदा होने से पूर्व या होने के समय गर्भवती के परिजन उसके तथा बच्चे के कल्याण के लिए,बकरे या मुर्गे की बली अपने आराध्य देवी– देवताओं को देने के लिए मन्नत मानते है। शिशु के जन्म के साथ ही गाने –बजने का दौर शुरू हो जाता है।

प्रसव के पश्चात प्रसूता को शिशु सहित कम से कम छह दिनों यानि छठीहार तकएक ही कमरे मे रखा जाता हैं। इस समय महिला कमरे से बाहर नही निकाल सकती है। इस दौरान किसी पुरुष का प्रवेश वर्जित रहता हैं। गर्भकाल के दौरान किसी स्त्रियों को भोजन पकाने की मनाही होती है जिसकी पूर्ति उसका पति करता हैं। जन्म के समय कोई महिला प्रसूता के साथ रहती है। घर मे दिया जलाया जाता है और ग्रामदेव बूड़ा देव और भ्योसन को बकरे की बलि चड़ाई जाती है। जिसका खून प्रसूता के बिस्तर के चारो ओर लगाते है। पैदा हुए बच्चे के चारो ओर नीम और खुरद का धुआं करते है।

शिशु के जन्म के छठे दिन छठीहार मानते है। उस दिन सुबह प्रसूता को स्नान कराया जाता है। तत पश्चात कुल देवता बूड़ादेव और ग्राम देवता मोरा देव की पूजा कराई जाती है जिसके बाद दोनों के शुद्ध होने की घोषणा कर दी जाती है। परिवार का कोई सदस्य बच्चे का नाम रख देता है। उसके बाद प्रसव वाले घर की सफाई कर उसे अन्य लोगों के लिए खोल दिया जाता है।

विवाह संस्कार

विवाह मानव जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण संस्कार है। विभिन्न कारणोएवं आवश्कताओ से नर–नारी के बीच विवाहएकऐसा बंधन या मुख्यतः समन्वय है जिसकी मान्य उपयोगिता है। कोलाम जाति भी विवाह की मर्यादा को अंगीकार करती है ,परन्तु अनोखे ढंग से। कोलाम समाज मे कुंवारा रहने की प्रथा नही है। विवाह के बारे मे कोलाम समाज मेएक सर्वमान्य धारणा है की प्रायः पति–पत्नी के बीचएक स्वैक्षिक समझौता है जिसका स्वेक्षा से या समयानुसार विच्छेद किया जा सकता है। कोलाम समाज मे स्त्रियों को सम्मान प्राप्त है जिसके कारण उनकी स्थिति ठीक होती है। कोलाम सोलह–सत्रह साल की लड़की को वयस्क मानते है। लड़की अपने वर का चुनाव खुद करती है। विवाहपूर्व यौन संबंध या कौमार्य कोई प्रश्न नही होता।

कोलाम जनजाति मे उपजातियां नही पाई जाती ,लेकिन वैवाहिक उद्देश्य के आधार पर उन्हें कई बहिर्विवाहिक समूहो मे बांटा जा सकता है। इन सभी समूहों के नाम मराठी मे हैं। जिनका अर्थ जनजाति के लोग खुद नही जानते है। सामान्य समूहो के बीच मे विवाह नही होता है। औरएक ही समूह मे कोई व्यक्ति अपनी दो बहनो का विवाह नही कर सकता। विवाह सामान्यतः परिपक्व उम्र मे ही होते है। कोलाम लोग मानते है की पूस(दिसम्बर) के महीने मे शादी या कोई पवित्र कार्य नही करना चाहिए। इसका कारण ये लोग मानते है की यह माह पित्रपूजा की जाती है। बोटोणी गांव के नाईक बताते है कि विवाहों का आयोजन बुधवार और शनिवार को किया जाता है ,खासतौर से सूरज डूबने के बाद। कोलाम लोगों के अनुसार विवाह, सोमवार के बुरा दिन माना जाता है। यदि सगाई टूटती है तो उस व्यक्ति को समाज मे कुछ पैसे और शराब जुर्माने के तौर पर बांटने पड़ते है।

एक विधवा औरत अपने माता –पिता की स्वीकृति के बाद दूसरी शादी कर सकती है। अगर वो किसी को पाने के इरादा कर लेती है तो उस व्यक्ति को अपने सिर पर घड़ा रखते हुए और बिना पीछे मुड़े घर मे प्रवेश करना होता है। कोई भी जोड़ा जो तलाक लेना चाहता है वोएक घडा शराब के साथ जाति पंचायत या पंचो के सामने प्रस्तुत होता है। साथ ही उस जोड़े के पासएक सुखी टहनी होती है। जिसे पति–पत्नी दोनों छोर से पकड़ते है। तब पति अपनी पत्नी को बहन के रूप मे संबोधित करता है ,पत्नी अपने भाई के रूप मे। दोनों मिलकर टहनी तोड़ देते हैं और इसे तलाक मान लिया जाता है।

मृत्यु संस्कार

कोलाम लोगो का आत्मा पर अथाह विश्वास उनके प्रकृति और आत्मा समर्पण को दिखाता है। मृत्यु के बाद बाद दो दिनो तक शरीर को सुरक्षित रखा जाता है। जिससे समाज के अन्य लोग इस संस्कार मे भाग ले सकें। कोलाम का मानना है की आत्मा आस–पास ही रहती है और बुलाने पर वापस आ जाती है। शव को घर के बाहर रख के आत्मा को आमंत्रित किया जाता है जिसे वापस बुला कर मांस खिलाने और शराब पिलाने का लालच दिया जाता है। कोलाम ये मानते है की उसके बाद गई हुई आत्मा घर के ही किसी सदस्य के भीतर आ कर भोजन करती है और अपने जाने का कारण बताती है। मृत शरीर को पानी पिलाया जाता है जिसके बाद आत्मा के पुनः प्रवेश का आह्वान करते है फिर भी यदि मृत जीवित नही होता तो उसके अन्तिम संस्कार की तैयारी करते है। गांव के बाहर शरीर को दफनाने का प्रबंध किया जाता है ,मेरे मुख्य सूचनादाता पेकूजी आत्राम ने बताया की शव को करवट लिटाते है। शव को सीधे दफनाने की बजाए उसे उत्तर की ओर करवट कर के गाड़ते हैं, पैर पश्चिम की ओर और सर पूर्व की ओर रखते है। महीने भर बाद उस स्थान की सफाई कर के उसे पक्का या चिन्हित कर दिया जाता है।

विश्वास और धर्मिक मान्यताएं

कर्नल मकेंजी कोलाम जनजाति के धार्मिक आस्थाओं के बारे मे बताते हुए कहते है कि कोलाम समुदाए के लोगों की आस्था किसी देवता मे नही है बल्कि वो मुख्य रूप से सूता को देवी के रूप मे मानते हैं और इसी देवी को वो अपने फसल का पहला फल या अनाज अर्पित करते है। इस देवी को गांव वाले पालनकर्ता के रूप मे देखते है। देवी को खुश करने के लिए गांव वाले बकरियों और मेमनो की बलि चड़ाते है। साथ ही ये देवी गांव को किसी भी महामारी या संकट से बचाती है। इस देवी कि स्थापना गांव के मध्य मे की जाती है। खेती से प्राप्त खाद्य अवयवो के द्वारा इस देवी कि पूजा चौत(अप्रैल) महीने के आखिरी दिन की जाती है। इस पूजा मे देवी पर हल्दी का लेप लगाया जाता हैं। साथ ही गांव के रोगों और महामारियों से बचाने के लिएएक विशेष प्रकार का आयोजन भी किया जाता है ,जिसे 'गांव बानी ' कहते है।

गांव बानी

किसी भी महामारी कि स्थिति मे गांव के लोग गांव से बाहर निकल आते है और गांव के चारो ओर कोनो पर चार पत्थर रख दिये जाते हैं। फिर गांव का मुखिया या नाईक सीता देवी और बुड़ादेव को खुश करने के लिए बकरी की बलि देता है। साथ हीएक मान्यता के अनुसार ये लोग नमक द्वाराएक सीमा रेखा खींचते हैं, जिसे 'बंदिश' कहते है। जैसा कि मान्यता है कि नमक द्वारा निर्मित इस रेखा को जंगली जानवर और बुरी आत्माएं पर नही कर सकती है।

विविध रीति रिवाज

कोलमों के घरों कि बात की जाये तोएक कमरे वाले मकान ज्यादा पाये जाते है जिनमेएक छोटा सा भंडारगृह होता है। पूरा परिवार बिना गोपनियता केएक साथ सोता है। कोलाम समुदाय मे धूम्रपान का जबरदस्त प्रचलन है। लेकिन ये लोगों अपने ही

घरों मे धूम्रपान नही करते बल्किएक सार्वजनिक स्थल पोड़ के मध्य ही होता है जिसे 'चावडी ' या समाज मंदिर(मौजूदा समय मे) कहते है पर ही की जाती है। सार्वजनिक उपस्थिति और समाज के प्रति उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए सभी कोलाम को 'चावडी' पर उपस्थित रहना पड़ता है जिसकी निगरानी नाईक करता है अगर समुदाय का कोई भी पुरूष सदस्य कम से कम दिन मेएक बार उपस्थित नही होता तो उसेएक संतुलित कारण बताना होता है।बीमार लोगों पर यह बाध्यता लागू नही होती है। वर्तमान समय में खर्रा तंबाकू(चुने और सुपाड़ी से बना) का सेवन कोलामों के बीच लोकप्रिय है।

कोलाम लोगों के पास अपने दो वाद्य यंत्र होते है पहला ढापरी(तापाते) और दूसरा 'वास' या बांसुरी जो की बांस से बना होता है। जिसका इस्तेमाल समाज मंदिर मे कोलाम लोग प्रतिदिन के सामान्य मनोरंजन और विशेष अवसरो पर करते है नृत्य करके पूरा करते है।

देव और गोत्र

2 देव गोंड –कोवे, सेके, चिरममा
4 देव –टेकाम, कुमरे, थूरखे
5 देव– टेकाम, येदसे, भोसे ,रामपुर ,सुरपाम
6देव–आत्रम, सुकली, शाभी, सेले, कौआकुयल, जोड़े, वाग्धारे ,खड़से, जाममे,बोरगामा कोड़वे, घटजी, अंजी, वडोना
7देव– मेश्राम, माजाम, केरगामा, वेदासी, माड़वी, धावडि, सवाजी, लोंसालवे, जुंधारे

टेकाम 4 और 5 देव दोनों मे समानता रहते है। यह गोंड लोगो के समान नहीं होते है।

गोत्र –भुरखे, कोलकी, लखु, वेदगमा, सीले, सीलकर, मारेगामा, बोटोनी, बयाबा, खड़से, बोडे, रवि, मांगुयरले, लुंचयक, यालकी, अंजी, लोनेकर, भड़वी, सेके, मशगी, डोबले, टेकाम ,कोड़पे,बगधारा,लोनसलवे, कोवा, घाटे।

रसेल और हीरालाल के 50 कुल(घराने,वंश)को चिन्हित किया।अब तक 114 कुल,गोत्र में टेकाम ,आयाम ,कोवे ,कुमरे,भसाम,कोड़पे ही गौड़ गोत्र मे भी पायें जाते है।

कोलाम नृत्य

लोककला के सबसे विशिष्ट रूप नृत्य में कोलाम बहुत सजग और स्वायत्त भूमिका निभाते है उनके प्रमुख लोकनृत्य निम्नलिखित है।

डांडर नृत्य

कोलाम लोगो की मुख्य नृत्य कला के रुप मे डांडर नृत्य का प्रचलन है। यह नृत्य कोलाम लोग नई फसल के घर आने की खुशी मे करते है। यह नृत्य उत्पादन के सम्मान और प्रकृति के सहयोग के आदर मे किया जाने वाला नृत्य है। कोलम लोग इसी नृत्य के साथ कृषि कार्य से विराम ले लेते है।

दिवाली की जगमगाती रोशनी के बीच डंडारी नृत्य कोलाम पुरुषों द्वारा किया जाता है, जो कि खुद को स्त्रियों की भांति सजाते, श्रृंगार करते है। घंटियां या करकारी के द्वारा संदेश भेज कर पुरे गांव को यह खबर दी जाती कि नृत्य शुरु होने वाला है।सबसे पहले यह नृत्य घाटिया या करकारी के सामने किया जाता है उसके बाद अन्य लोगो के घर–घर जाकर नृत्य समुह के लोग नृत्य करते है सबसे आखिर मे गांव के मुखिया के घर के बाहर यह नृत्य का कार्यक्रम होता है जहां इसकी समाप्ति होती है। वही नृत्य समूह के लोगों को गांव का नाईक मुद्राएं तथा अन्य सामग्री देने के साथ साथ भोजन का कार्यक्रम करता है। डांगर नृत्य रास के नाम से जाना जाता है। जिसे गुजरात के नृत्य कला गरभा के रूप में देखा जा सकता है। इस नृत्य कला मे अलग अलग पोड़ के के युवक स्त्रियों की वेषभूषा धारण कर रंगीन बांस के डंडों के साथ नृत्य करते है।

कोलाम युवकों के लिए यहएक प्रतियोगिक दिन होता है जिस समूह के नर्तक यह प्रतियोगिता जीतते हैं उन्हें पुरुस्कृत किया जाता है,यह निर्णय उनके श्रृंगार और साजसज्जा के साथ नृत्य और वादन के आधार पर दिया जाता है। अक्सर नृत्य समूह में पांच सदस्य होते हैं , जिसमेएक सदस्य बांसुरी औरएक सदस्य छपरी बजता है और शेष नृत्य करते हुए गाते हैं। डंडारी के अलावा अन्य नृत्य कलाएं भी कोलाम लोगों की संस्कृति में स्थान रखते हैं। उनमें कुछ प्रमुख रूप से निम्नलिखित है–

घोरपद कोला

घोरपदएक प्रकार का सरीसृप प्राणी है जिसे बड़ी छिपकली या गोह कहा जाता है, के शिकार की खुशी में किया जाने वाला यह नृत्य शिकार पर विजय के रूप माना जाता है। परिवार अथवा समूह के लोग जिनकी संख्या दस तक होती है समूह नृत्य करते हैं जिसमें सभी लोग घड़ी की सुई की उल्टी दिशा में चक्कर काटते हैं तथा मुख्य नृतक सरीसृप की नकल करता है, जिसपर अन्य लोग छोटे डंडों को आपस में लड़ा कर घूमते हुए नृत्य करते हैं। जिसमें घुटने और कलाइयों को थोड़ा हिलाते हुए नृत्य करना होता है। धापरी (धोलक),बांसुरी और मंजीरा की थाप पर यह नृत्य होता है। अब यह नृत्य परंपरा खत्म हो रही है। नई पीढ़ी के युवा कोलाम अब फिल्मी धुन पर नृत्य करते हैं।

लोहान नृत्य

यह नृत्य सर्दियों के मौसम में किया जाता है जिसमें सिर्फ पुरुष भाग लेते हैं।

मोठा नृत्य

इस नाटक शैली में कोलाम लोग बड़े घेरे में समूह में नृत्य करते हैं बड़े गोले के बीच में कोलाम युवक साड़ी पहन कर अपने सहयोगी के साथ नृत्य करते हैं। यह नृत्य दीपावली के समय ही किया जाता है।

देमसाकोला

यह नृत्य लोहान नृत्य की तरह ही होता है पर इसमें कलाबाजी करते हुए नृत्य की परंपरा है जो नई फसल की खुशी में किया जाता है।

चौटाली

यह नृत्य शैली डंडारी की तरह ही होती है पर इसमें पुरुष ,स्त्रियों की भांति खुद के व्यवहार को बदल देते लेते हैं उन्हीं की तरह व्यवहार करते हुए रंगीन डंडियों और रूमाल के साथ ढोलक की धुन पर नृत्य करते हैं। यह नृत्य भी सिर्फ पुरुषों के लिए ही होता है।

चौटाली आदिम

यह नृत्य भी पुरुषों के द्वरा ही किया जाता है जिसमें वे घाघरा पहन कर चेहरे में सफेदी लगाकर नृत्य करते हैं। यह परंपरा अफ्रीका की कुछ जंजातियों में भी डेकाह जाता है।

रेला नृत्य – मुख्यतः यह नृत्य कोलाम महिलाओं द्वारा किया जाता है परंतु इसमें पुरुष भी भाग ले सकते हैं। इस शैली में पुरुष और महिला आपस में हाथ पकड़कर घेरे के उल्टे चक्कर लगाते हैं।

परिवर्तन

यह प्रभाव धार्मिक ,सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधो के साथ–साथ आर्थिकी और जीवन शैली को भी प्रभावित कर

रहा।एक राजनीतिक समूह के रूप में कोलाम समाज की हिस्सेदारी भी स्थानीय समाज में बढ़ी है जिसका उपयोग भी कोलाम लोग कर रहे है। परिवर्तन की लालसा या दबाव मानव पारिस्थितकी में आये परिवर्तनों और प्रवसन के दीर्घकालीक दबावों के कारण संभव हुआ है। कोलाम अन्य समाजों के साथ अपने समन्वयन के साक्षी के तौर पर समाज में अपनी हिस्सेदारी दे रहे है। भले ही उन्हें अभी भी भारत की षपिछड़ी जनजातियोंष के समूह के जरिए ही पहचान प्राप्त है। समय के साथ कोलाम संस्कृति में परसंस्कृति और संस्कृतिकरण के प्रभाव भी आये है। सीधे तौर पर अन्य जातीय और मुख्यधारा से संपर्क में आने पर कोलाम लोककलाओं और संस्कारों पर विभिन्न तरीकों से प्रभाव पड़ा है। नृत्य भी बदल गया है फिल्मी धुनों पर नृत्य के साथ–साथ अपनी परंपरागत नृत्य शैली जो बनाए रखने के लिए दीपावली के अवसर पर प्रतियोगताएं आयोजित की जाती हैं जिसमें डंडारी और घोसंडी नृत्य शैली के पेशेवर नर्तक भाग लेते हैं। जिसे परंपरा के रूप में नृत्य शैली को जीवित रखने और संस्कृति को बचाए रखने की परंपरा के रूप में यह शामिल किया जा सकता है।

Reference (संदर्भ)

1. C.Brown e- b- (1908) - Central Provinces District Gazetteers. Yeotmal District] - Central Provinces District Gazetteers] Yeotmal District vol A.
2. Murkute. S. (1990) - Socio&cultural Study of Scheduled Tribes: The Pardhans of Maharashtra- New Delhi: concept publication.
3. Shashishekhar G-deogankar.shailja S deogankar (2003 Tribal Dance and Songs.New Delhi: concept publication.
4. Shashishekhar Gopal Deogaonkar. L- (2003) the Kolam Tribals. New Delhi: concept publication.
5. Upadhyay. P- (2011).Impact of migration on Kolam primitive tribe in yavatmal district - wardha: Unpublised Mphil Disertation.